ISSN 2395-051X

भारत में पर्यटन विकास

डॉ. एम.एम. चौकसे
प्राध्यापक - वाणिज्य
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भारत विविधताओं से परिपूर्ण देश है। विविधता जिज्ञासा को जन्म देती है। जिज्ञासा यात्रा को जन्म देती है जिज्ञासा पूर्ण यात्रा ही पर्यटन को जन्म देती है। विश्व में वैभवशाली पर्यटन केन्द्र के रूप में भारत का प्रमुख स्थान है। विश्व में भारत ही ऐसा देश है जहॉ प्राकृतिक सुन्दरता, सांस्कृतिक विविधता, सुन्दर तथा रमणीय समुद्र तट, कश्मीर जैसी नैसर्गिक सुन्दरता, हिमाच्छादित पर्वत मालायें, विभिन्न मंदिर, मस्जिद तथा प्राचीन किले सदैव से पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहें है।

भारत में पर्यटन विकास

भारत में पर्यटन विकास का इतिहास काफी पुराना है। भारतीय पर्यटन उतना ही पुराना है, जितनी इसकी सभ्यता। पुरातत्वीय प्रमाणों से इस बात की पुष्टि होती हे कि ईसा से 3000 से 1500 वर्ष पूर्व हड़प्पा के लोग सुमेर व फारस की खाड़ी स्थित कस्बों से व्यापार करने के लिये नियमित यात्रयें करते थे। मेसोपोटानिया में हड़प्पा की मुद्राओं का मिलना इस बात का संकेत है कि भारत व ईराक के बीच व्यापारिक संबंध थे। अशोक महान ने अपने शासन काल में (273-232 ई.पु.) यात्रियों के लिये धर्मशालाओं, सड़कों तथा कुओं का निर्माण कराया। गुप्तकाल के शासकों ने जिसकी अवधि सन् (319-455) के बीच की है, भारतीय पर्यटन को बढ़ाने में अपना अमूल्य योगदान दिया। अकबर के अपने शासन काल में आगरा व फतेहपुर किलों का निर्माण कराया। शहजहॉ ने गद्दी पर बैठने के बाद ताजमहल का निर्माण कराया जो शिल्पकला के लिये विश्व प्रसिद्ध है, तथा आज भी विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में प्रयास प्रारंभ किये। जिनमें रेल यातायात का प्रारंभ, संचार साधनों का विकास, वायु सेवाओं का विस्तार, होटलों की स्थापना, बंदरगाहों का विकास, पर्वतीय पर्यटन केन्द्रों की स्थापना आदि शामिल है।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में पर्यटन परिदृश्य

स्वतंत्र भारत में पर्यटन के विकास पर समुचित ध्यान दिया जा रहा है, सर्वप्रथम 1949 में टूरिज्म ट्रेफिक ब्रांच की स्थापना की, इसका उद्देश्य पर्यटन हेतु यातायात सुविधाओं का विकास करना था। 1952 पर्यटन हेतु प्रथम समुद्र पार कार्यालय न्यूयार्क में 1957 में फेंकफर्ट में खोला गया, 1965 में झा समिति की अनुशंसा के अनुरूप पर्यटन विभाग में तीन पृथक-पृथक निगमों की स्थापना की।

(1) होटल कार्पोरेशन आफ इंडिया लि.।
(2) इंडियन टूरिज्म कार्पोरेशन लि.।
(3) इंडियन टूरिज्म ट्रांसपोर्ट अण्डरटेकिंग लि.।

सरकार द्वारा स्थापित तीनों निगमों में आपसी समन्वय न होने के कारण अपेक्षित प्रगति हासिल नहीं

की जा सकी। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने पर्यटन के महत्व को स्वीकारते हुए 1967 में पर्यटन व नागरिक उड्यन मंत्रालय की स्थापना। पर्यटन विकास की दिशा में यह महत्वपूर्ण कदम था। पर्यटन विकास हेतु सरकार द्वारा 1982, 1988, 1992, 1998 तथा 2002 में पर्यटन संबंधी योजना के लिये पर्यटन नीतियों का निर्माण किया गया। 2009 में अतुल्य भारत सुरक्षित पर्यटन अभियान प्रारंभ किया गया। यू.पी.ए. सरकार ने सिने स्टार आमिर खान को पर्यटन विकास हेतु ब्रांड एम्ब्रेसेडर बनाया तथा ''अतिथि देवो भव'' का नारा देकर पर्यटन विकास हेतु प्रयास किया। सरकार द्वारा अतुल्य भारत हेल्पलाइन 1800-11-1363 को शुभारंभ किया। वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी माना है, पर्यटन क्षेत्र में न केवल रोजगार की विपुल संभावनायें मौजूद हैं बल्कि यह क्षेत्र रोजगार भी उपलब्ध कराने में सक्षम है।

भारत में पर्यटन की वर्तमान स्थिति

भारत विश्व के लोगों के लिये पर्यटन का सुरक्षित स्थल है। वर्ष 1950 में जहाँ देश में 0.53 लाख पर्यटक आये, वहीं यह संख्या बढ़कर 1970 में 2.80 लाख, 1990 में 8.00 लाख, 2000 में 26.65 लाख, 2010 में 57.8 लाख हो गई देश में न केवल पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो रही, बल्कि विदेशी मुद्रा अर्जन की दृष्टि से भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। 1997 में 11051 करोड़ रूपये, 2007 में 44360 करोड़ रूपये, 2014 में 123320 करोड़ रूपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई। योजना आयोग के अनुसार पर्यटन को कम दक्ष और अकुशल श्रमिकों को रोजगार प्रदान करने वाला दूसरा बड़ा क्षेत्र माना है। पर्यटन उद्योग एक बड़ा उद्योग है जिसका सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सा लगभग 6.5 प्रतिशत है। देश के लगभग 4 करोड़ लोगों को इससे प्रत्यक्ष तौर पर रोजगार मिला हुआ है। भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या को तालिका क्र. 1 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रं. 1

भारत में विदेशी पर्यटक आगमन (1905 से 2015 तक)

वर्ष	संख्या (मिलियन में)
1950	0.05
1960	0.12
1970	0.28
1980	0.80
1990	1.71
2000	2.65
2005	3.92
2006	4.45
2007	5.08
2008	5.28
2009	5.17
2010	5.78
2011	6.31

2012	6.58
2013	6.97
2014	7.68
2015 (जनवरी से अगस्त)	5.89

स्त्रोत - पर्यटन मंत्रालय प्रतिवेदन 2014-15

तालिका क्र. 1 से स्पष्ट हे कि देश में विदेशी पर्यटकों के आगमन में निरंतर वृद्धि हो रही है वर्ष 2000 से 2015 के बीच में वार्षिक औसत वृद्धि 5.48 प्रतिशत रही है।

भारत आने वाले विदेशी पर्यटक अब तक गोवा को सर्वाधिक पसंद करते रहें, लेकिन अब उनकी पसंद दिल्ली, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, केरल व हरियाणा भी है। भारत में वर्ष 2005 में पर्यटन उद्योग से 33123 करोड़ रूपये, 2010 में 64889 करोड़ रूपये, 2014 में 123320 करोड़ रूपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई। वर्ष 2000 से 2015 के बीच प्राप्त विदेशी मुद्रा को तालिका क्र. 2 में दर्शाया गया है।

तालिका क्र. 2

पर्यटन उद्योग से प्राप्त विदेशी मुद्रा एवं परिवर्तन

वर्ष	विदेशी पर्यटकों से प्राप्त विदेशी मुद्रा - अमेरिकी मिलियन में	पिछले वर्ष की तुलना में बदलाव प्रतिशत में
2000	3460	-
2001	3198	-3.6
2002	3103	-3.0
2003	4463	43.8
2004	6170	38.2
2005	7493	21.4
2006	8634	15.2
2007	10729	24.3
2008	11832	10.3
2009	11136	-5.9
2010	14193	27.5
2011	16564	16.70
2012	17737	7.1
2013	18445	4.0

तलिका क्र. 2 से स्पष्ट है कि विदेशी पर्यटकों के आगमन से प्राप्त विदेशी मुद्रा की प्राप्ति में उतार-चढ़ाव की प्रवृत्ति लगातार बनी हुई है।

भारत में घरेलू पर्यटक

भारत में भ्रमण करने वाले घरेलू पर्यटक तथा भारत से विदेश जाने वाले भारतीय पर्यटकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। वर्ष 1999 में घरेलू पर्यटकों की संख्या लगभग 1.67 करोड़ थी भारत से 4 लाख

स्वदेशी पर्यटक प्रतिवर्ष विदेशों में छुट्टियां मनाने जाते हैं। भारत से विदेश जाने वाले घरेलू पर्यटकों की संख्या को तालिका क्र. 3 में दर्शाया गया है।

तालिका क्र. 3

भारत से विदेश जाने वाले पर्यटकों की संख्या

वर्ष	भारत से विदेश जाने वाले भारतीय पर्यटकों की संख्या (मिलियन में)	पिछले वर्ष की तुलना में परिवर्तन प्रतिशत में बदलाव
2004	6.21	-
2005	7.18	15.6
2006	8.34	16.1
2007	9.78	17.3
2008	10.87	11.1
2009	11.07	1.8
2010	12.99	17.4
2011	13.99	7.7
2012	14.92	6.7
2013	16.63	11.4
2014	18.33	10.3

स्त्रोत - भारतीय आव्रजन ब्यूरो भारत सरकार

तालिका क्रं. 3 से स्पष्ट है कि भारत से विदेश जाने वाले पर्यटकों की संख्या में निरंतर वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है।

तालिका क्रं. 4

भारत के सभी राज्यों एवं केन्द्र शासिल प्रदेशों में भ्रमण करने वाले घरेलू पर्यटकों की संख्या

वर्ष	घरेलू पर्यटकों की संख्या (मिलियन में)	गत वर्ष की तुलना में बदलाव प्रतिशत में
2000	220.11	-
2001	236.47	7.4
2002	269.60	14.0
2003	309.04	14.6
2004	366.27	18.5
2005	392.01	7.0
2006	462.32	17.9
2007	526.56	13.9
2008	563.03	6.9
2009	668.80	18.8

2010	747.70	11.8
2011	864.53	15.6
2012	1045.05	20.9
2013	1145.28	9.6
2014	1281.95	11.9

स्त्रोत - वार्षिक रिपोर्ट पर्यटन मंत्रलय भारत सरकार

देश में पर्यटकों की भ्रमण की संख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई दे रही है।

देश में पर्यटन एवं रहने की सुविधा की वर्तमान स्थिति

31 मार्च 1998 तक पर्यटन विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त 1164 होटल भारत में थे, जिनमें कुल 65000 कमरे पर्यटकों के रहने हेतु उपलब्ध थे। 43 होटल पॉच सितारा और डीलक्स, 56 पॉच सितारा, 74 चार सितारा, 46 हैरिटेज, 289 तीन सितारा, 314 दो सितारा, 142 एक सितारा थे। वर्ष 2014 में भारत में उपलब्ध होटलों की संख्या तथा कमरों की उपलब्धता को तालिका क्रं. 5 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रं. 5

भारत में पर्यटन विभाग द्वारा अनुमोदित होटल एवं उनमें कमरे की उपलब्धता

क्र.	होटलों की श्रेणी	होटलों की संख्या	उपलब्ध कमरें
1.	एक सितारा	14	1193
2.	दो सितारा	75	1813
3.	तीन सितारा	538	22202
4.	चार सितारा	136	8143
5.	पॉच सितारा	96	12183
6.	पॉच सितारा डीलक्स	122	25891
7.	आपर्टमेन्ट होटल	3	249
8.	विश्रामगृह	5	77
9.	हेरिटेज होटल	44	1266
10.	सिल्वर बेड एवं चायनाश्ता सुविधा	53	242
11	अवर्गीकृत	119	9045
	कुल -	1232	82304

स्त्रोत - पर्यटन मंत्रालय वार्षिक रिपोर्ट 2014

देश में बढ़ते पर्यटकों की संख्या को देखते हुए कहा जा सकता है कि अभी भी देश में होटलों की कमी है इसमें तत्काल वृद्धि की आवश्यकता है।

भारत में पर्यटन विकास के अवरोध

यदि भारत में पर्यटन विकास की वर्तमान तुलना पिछले 5 से 10 वर्ष पूर्व से करें तो हमें पर्यटन विकास का सकारात्मक चित्र सामने आता है कि पर्यटन के क्षेत्र में हम विदेशी तथा घरेलू दोनों क्षेत्रों में प्रगति कर रहे हैं, किन्तु जब हम या तुलना विश्व के अन्य देशों से करते हैं तो अत्यंत निराशाजनक तस्वीर हमारे सामने आती है, इसके पीछे जो उत्तरदायी कारण हैं वे निम्नानुसार हैं :-

1. पर्यटकीय सेवाओं की गुणवत्ता में कमी।
2. यात्रा व परिवहन संबंधी सेवाओं में कमी।
3. आवासीय सुविधाओं में कमी तथा निम्न स्तर।
4. टूरिस्ट गाइडों की कमी।
5. बैंकिंग, बीमा तथा चिकित्सा सेवाओं की कमी।
6. अपराध व आतंकवाद, लम्बी कानूनी प्रक्रिया।
7. पर्याप्त सूचनाओं की कमी।
8. सरकारी नीतियॉ।
9. देश में पर्यटक स्थलों पर गंदगी, भिखारियों की उपस्थिति, आवारा पशुओं का विचरण, बंदरों का आतंक आदि।
10. हवाई सुविधाओं की कमी, रेल सुविधाओं की कमी तथा विदेशी पर्यटकों को पृथक आरक्षण व्यवस्था का अभाव।

आज पर्यटन पर सरकार द्वारा काफी ध्यान दिया जा रहा है, जिस कारण पर्यटन नित्त नई ऊचाइयों को छू रहा है, तथा पर्यटन क्षेत्रों में आने वाली बाधाओं को दूर करने हेतु निरंतर सरकारी प्रयास जारी है। वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा लगातार विदेशों के दौरे किये जा रहे तथा विदेशी शासकों तथा वहॉ की जनता को यह भरोसा दिलाया जा रहा है कि भारत एक सुरक्षित तथा विकसित देश है भारत आने वाले हर विदेशी मेहमान की सुख सुविधा व सुरक्षा की व्यवस्था भारत सरकार व राज्य सरकारों द्वारा की जायेगी इसका सकारात्मक असर आने वाले समय में दिखाई देगा।

भारत में पर्यटन विकास के उपाय

1. भारतीय रेल द्वारा हेरिटेज रेलों का संचालन
2. विरासत होटल विकास योजना का क्रियान्वन / तथा करों में छूट।
3. ग्रामीण पर्यटन स्थलों का विकास।
4. दस्तकारी तथा शिल्प मेलों का आयोजन।
5. कानून व्यवस्था की स्थिति में सुधार आतंकवाद पर रोक।
6. सड़कों की गुणवत्ता में सुधार विभिन्न क्षेत्रें से तीब्रगति की रेलों का संचालन।
7. जल परिवहन का विकास।
8. पर्यटन क्षेत्रें में विकास हेतु विदेशी पूंजी के आगमन को प्रोत्साहन।
9. पर्यटक स्थलों की जानकारी का प्रचार प्रसार तथा प्रशिक्षित टूरिस्ट गाइड़ों की नियुक्ति।
10. वीजा संबंधी नियमों का सरलीकरण।

भारत में पर्यटन विकास की अपार संभावनायें हैं भारत के कुल रोजगार में पर्यटन की 8.78 प्रतिशत की भागीदारी है। 2008 से लेकर 2018 तक पर्यटकों की संख्या में 27.5 विलियन तक बढ़ोत्तरी की संभावना है। पर्यटन परिषद के अनुमान के मुताबिक उक्त दस वर्ष की अवधि में भारत पर्यटन के आकर्षण का केन्द्र बन जायेगा। भारत में चिकित्सा पर्यटन का क्षेत्र भी तेजी से विकसित हो रहा है।

ISSN 2395-051X

वर्तमान परिदृश्य में देश में पर्यटन उद्योग के विकास के लिये सरकार तथा निजी क्षेत्र दोनों को मिलकर कार्य करना होगा। पर्यटन क्षेत्रें में पर्यटकों से ठगी पर रोक उनकी सुरक्षा तथा रहने की पर्याप्त व्यवस्था सरकार को करनी होगी। अतुल्य भारत, अतिथि देवो भव की संकल्पना केवल नारों में नहीं दिखनी चाहिये, बल्कि वास्तविक धरातल पर इसका क्रियान्वन कर देश में पर्यटन की एक नई संस्कृति विकसित करनी होगी।

सन्दर्भ

1. पर्यटन मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट 2014।
2. भारत में पर्यटन उद्योग समस्यायें एवं सुझाव - डॉ. एम.एन. देशकर।
3. पर्यटन भूगाल - डॉ. विमल कपूर।
4. पर्यटन भूगोल - हरीश कुमार खत्री।
5. विकिपीडिया मुक्त कोष - भारत में पर्यटन।
6. www.indiatourism.nic.in
7. www.incredibleindia.org.
8. दैनिक भास्कर समाचार पत्र।
9. पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबंधन - डॉ. सुरेश चंद्र बंसल।